E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

खादी ग्रामोद्योग अनुसंधान एवं विकास : एक अध्ययन

गितेश कुमार गुप्ता
सहायक आचार्य,
वाणिज्य विभाग,
विद्यांत हिन्दू पी0जी0 कालेज,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वस्त्र मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है वस्त्र के उपयोग का इतिहास मानव सभ्यता के इतिहास के साथ–साथ आगे बढ़ता है। ऐतिहासिक सन्दर्भ में यह कहना कठिन है कि वस्त्र की खोज या उसका उपयोग कब से प्रारम्भ हुआ। आदि मानव भी शायद किसी न किसी चीज से शरीर को ढकता था। जहाँ तक वस्त्र उत्पादन की कला एवं तकनीक का प्रश्न है, प्राचीन काल में इसका उत्पादन घर–घर में किया जाता था। यह उत्पादन छोटे–छोटे औजारों से किया जाता था। इन औजारों को डेरा, तकली, चरखा, चरखी, करघा आदि नामों से जाना जाता था। ऐतिहासिक प्रमाणों से यह सिद्ध है कि भारत में प्राचीन काल में भी उत्तम किस्म के सूती वस्त्र का उत्पादन होता था और इन वस्त्रों को बड़े पैमाने पर निर्यात भी किया जाता था।

मुख्य शब्द : चरखा, चरखी, करघा खादी ग्रामोद्योग, कताई–बुनाई।

प्रस्तावना

खादी एवं ग्रामोद्योग भारतीय संस्कृति का अनिवार्य अंग है भारत में वस्त्र एवं कुटीर उद्योग का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है आचार्य विनोवा भावे ने प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला था कि कपास की खेती का इतिहास 20 हजार वर्ष पुराना है तथा आर्य सभ्यता में कपड़ा बुनने की अवस्था कला उन्नत अवस्था में थी। समय के साथ–साथ इस कला में प्रगति होती रही और 17वीं शताब्दी तक भारत में खादी और ग्रामोद्योग अपने चर्मोत्कर्ष पर थे। उस समय ढाका की मलमल जगत प्रसिद्ध हो गयी थी तथा कुटीर उद्योगों में बना माल निर्यात होता था।

अंग्रेजों के आगमन के साथ–साथ खादी और ग्रामोद्योग का पराभव प्रारम्भ हो गया। औद्योगिक क्रान्ति ने मशीनों के प्रचलन को बढ़ावा दिया तथा अंग्रेजों ने इग्लैण्ड में बने माल को खपाने के लिए हमारे उद्योगों पर अनेक प्रतिबंध लगा दिये। जिस कारण हमारे ग्रामोद्योग समाप्त होने लगे। 19वीं शताब्दी खत्म होते–होते भारत वस्त्रों के लिए विदेशों पर निर्भर हो गया। वस्त्र उद्योग का निर्यातक भारत अब विदेशों पर कपड़ों के लिए मोहताज हो गया। यही स्थिति ग्रामोद्योगों की हो गयी प्राचीन काल में जहाँ प्रत्येक गाँव एक स्वतन्त्र औद्योगिक इकाई के रूप में विकसित हुआ तथा आत्मनिर्भर था, वह मशीनी क्रान्ति के फलस्वरूप गरीबी के दल–दल में धसता चला गया। महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम राजनैतिक आजादी के साथ–साथ आर्थिक आजादी की बात उठाई। उनका यह मानना था कि बिना आर्थिक आजादी के राजनैतिक आजादी का कोई मतलब नहीं है। उनके विचारों से तत्कालीन सभी राजनेता सहमत थे और उनकी प्रेरणा से ही वर्तमान खादी एवं ग्रामोद्योग का पुर्नजन्म हुआ। महात्मा गाँधी ने विदेशी वस्त्रों की होली और स्वदेशी वस्त्रों को अपनाने का नारा दिया। गाँधी जी ने वर्ष 1926 में घोषणा कि ''स्वदेशी स्वराज्य की आत्मा है खादी स्वदेशी का मूल अर्क है।''

महात्मा गाँधी की प्रेरणा से खादी और ग्रामोद्योगों की आधुनिक विकास यात्रा प्रारम्भ हुई और आज उसने एक विशाल स्वरूप ग्रहण कर लिया है।स्वतन्त्रता के बाद खादी एवं ग्रामोद्योग को ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के प्रमुख साधन के रूप में मान्यता दी गयी और इसके लिए पंचवर्षीय योजनाओं में विभिन्न प्रकार की योजनाएँ प्रारम्भ की गई। केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड का गठन किया और राज्य सरकारों द्वारा भी जिला केन्द्रों पर जिला उद्योग केन्द्र और विविध प्रकार की खादी और ग्रामोद्योग संस्थाओं का गठन किया गया।

1 अप्रैल, 1957 को शीर्ष स्तर पर खादी और ग्रामोद्योग आयोग के गठन के बाद खादी के नाम पर गठित विभिन्न संस्थाओं को इसमें विलीन कर दिया गया। खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के तीन प्रमुख उद्देश्य घोषित किये गये–

1. रोजगार उपलब्ध कराने वा सामाजिक उद्देश्य।
2. बिक्री योग्य वस्तुओं के उत्पादन करने का आर्थिक उद्देश्य।
3. आत्म–निर्भरता एवं सामुदायिक भावना व्यापक करने का उद्देश्य।

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा समाज समय–समय पर खादी और ग्रामोद्योगों को परिभाषित भी किया गया है। इसकी वर्तमान परिभाषा के अनुसार

खादी का अर्थ है कपास, रेशम या ऊन के हाथ कते सूत अथवा इनमें से दो या सभी प्रकार के सूत्रों के मिश्रण से भारत में हथकरघे पर बुना गया कोई भी वस्त्र।

ग्रामोद्योग का अर्थ है ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित कोई भी उद्योग जो बिजली का इस्तेमाल करके या कोई वस्तु उत्पादित करता हो या कोई सेवा करता हो जिसमें स्थाई पूँजी निवेश (संयंत्र, मशीनरी भूमि और भवन में) प्रति कारीगर या कार्यकर्ता मैदानी क्षेत्रों में 1,00,000 एवं पहाड़ी क्षेत्रों में 1,50,000 रूपये से अधिक न हो।

स्थापना के बाद से ही खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा उपयुक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वरोजगार से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम चलाये गये। जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम था जो अब प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम है, इसके अतिरिक्त जितनी भी योजनाएँ खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा संचालित की जा रही हैं, उन सभी को प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में समाहित करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में खादी और ग्रामोद्योग के आदिकाल से वर्तमान समय तक का अध्ययन करते हुए खादी एवं ग्रामोद्योग की समस्याओं और संभावनाओं का अध्ययन किया गया। साथ ही समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव भी सम्मलित किये गये हैं।

श्री गाँधी आश्रम की स्थापना

आचार्य जीवत राम भगवान दास कृपलानी (जे0बी0 कृपलानी) ने 27 नवम्बर, वर्ष 1920 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में गाँधी जी के भाषण से प्रेरित होकर 29 नवम्बर, वर्ष 1920 में 'श्री गाँधी आश्रम' की स्थापना की और 280 की मामूली राशि से उत्पादन तथा बिक्री गतिविधियाँ शुरू की। आश्रम के संस्थापक स्वयं आचार्य जे0बी0 कृपलानी थे। खादी गतिविधि आयोजित करने वाली यह पहली संस्था बनी और आश्रम का पहला बिक्री भण्डार बुलानाला (बनारस) पर खोला गया।

श्री गाँधी आश्रम का मुख्यालय बनारस से मुजफ्फरनगर लाने का पहले विचार बना, लेकिन बाद में मेरठ लाने का निर्णय किया गया और आश्रम का प्रधान कार्यालय बनारस से मेरठ वर्ष 1926 में लाया गया। सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 21, 1860 के अन्तर्गत वर्ष 1928 में श्री गाँधी आश्रम का पंजीकरण क्रमांक 32 पर हुआ श्री कृपलानी जी, पं0 जवाहर लाल नेहरू, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, चौ0 रघुबीर नारायण और जमनालाल बजाज प्रथम ट्रस्टी मण्डल में थे। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में आश्रम का कार्यकाल फैल गया। बंगाल प्रान्त में सोनामुखी और जलालपुर में ठाकुर देवकरण सिंह ने वर्ष 1947 में रेशम कताई, बुनाई केन्द्र खोला।

खादी का वैचारिक आधार

खादी वस्त्र नहीं विचार है

'खादी' शब्द मात्र से मन में शुद्धता और सादगी की अनुभूति होती है। इसी प्रकार खादी का विचार आते ही अन्तःकरण से भी अशुद्ध विचार दूर हो जाते हैं। खादी वस्त्र को देखने मात्र से लगता है जैसे मानवीय करूणा जीवित हो उठी है। लगता है जैसे सत्य और अहिंसा खादी के माध्यम से मुखरित हो उठे है और उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे इसका प्राकृतिक सौन्दर्य और शुद्धता हमें उस मार्ग पर चलने का आवाह्न कर रहे हैं, जो समरसता से सराबोर है, श्रेयस्कर है और सर्वश्रेष्ठ है। खादी मात्र वस्त्र ही नहीं, अपितु यह एक विशिष्ट विचार अथवा आदर्श भी है जो हमारे आचरण को सही दिशा में बढ़ने हेतु प्रेरित करता है। खादी में अन्तर्निहित यह भावना जब तक हम स्वयं समझ नहीं पायेंगे और लोगों में खादी का प्रचार करते समय इन मूल्यों से उन्हें अवगत नहीं करा पायेंगे, तब तक खादी प्रचार का अभियान अपूर्ण ही रहेगा और अपने अभीष्ट की प्राप्ति नहीं कर पायेगा। खादी कार्यक्रम में ठहराव आने का यह भी एक प्रमुख कारण है।

खादी वस्त्र तो हैं ही, किन्तु यह केवल वस्त्र मात्र नहीं है, उससे कहीं अधिक खादी एक आदर्श है, विचार है, आचार है, व्यवहार है और साथ ही व्यापार भी है। इसके वैचारिक पक्ष को समझने के लिए हमें खादी की विशेषताओं को समझना होगा जो अनगिनत हो सकती है, किन्तु संक्षेप में निम्न बिन्दुओं को समझने से इसके वैचारिक पक्ष को समझा जा सकेगा–

1. शुद्ध प्राकृतिक एवं पर्यावरण सहायक
2. स्वास्थ्यवर्धक व सादगी का प्रतीक
3. मानवीय श्रम की प्रतिष्ठा की द्योतक
4. सत्य और अहिंसा मौलिक अधिकार
5. साधना, समर्पण, संघर्ष, त्याग और बलिदान का प्रतीक
6. मानवता और मानवीय मूल्यों की परिचायक
7. स्वदेशी और राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रतीक
8. ग्रामीण विकास और विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता

खादी और न्यासधारिता (Trusteeship)

गाँधी जी ने खादी को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ा। उन्होंने कांग्रेस के समक्ष खादी के उपयोग का प्रस्ताव रखा, जिसे स्वीकार किया गया। वर्ष 1922 में स्वीकृत इस प्रस्ताव में कहा गया, ''खादी आन्दोलन का महान् राजनैतिक मूल्य होने के अलावा वह भारत के करोड़ों लोगों को घर बैठे फुरसत के समय एक स्थायी गृह उद्योग देगा। भूखे करोड़ों लोगों की आज की आमदनी में कुछ वृद्धि करेगा। इस प्रकार खादी धीरे–धीरे राष्ट्रीय बचत माध्यम के रूप में प्रचलित होती गयी।

गाँधी जी ने वर्ष 1923 में तिलक स्मारक निधि का पूरा कोष अखिल भारतीय खादी मण्डल के लिए दे दिया। जब उन्हें पता लगा कि इस निधि का उपयोग, उसके सदस्य अपने राजनैतिक प्रचार–प्रसार के लिए भी करते हैं तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। तब उन्होंने रचनात्मक कार्य के लिए 25 सितम्बर, 1925 में तिलक स्मारक निधि

की बची हुई 25.00 लाख धनराशि के साथ अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना पटना में की, जो एक स्वतन्त्र संगठन था जिसके वे स्वयं अध्यक्ष और पंडित जवाहर लाल नेहरू मंत्री हुए और जिसके जिम्मे मात्र खादी प्रचार–प्रसार का ही काम था। इसके सदस्यों को न्यासधारी (ट्रस्टी) कहा जाता था। वे समर्पित व्यक्ति थे और निःशुल्क सेवा करते थे। खादी कार्य से जो भी बचत होती थी, वे उसका पूरा उपयोग खादी कार्य को आगे बढ़ाने में ही किया करते थे। चरखा संघ की स्थापना से उन्होंने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था पर आधारित ग्राम–स्वराज्य की बुनियाद रखी बल्कि अतिरिक्त रोजगार के साधन विशेषकर गाँवों में पैदा कर लाखों लोगों को घर बैठे रोजगार के साधन पैदा किये। उस समय कपड़े के आयात के कारण जो 60 करोड़ रुपये इंग्लैण्ड जा रहा था, उसकी निकासी को उन्होंने रोक दिया, परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड की मिलों में बेरोजगारी पैदा हो गई। वर्ष 1927 में पहली बार खादी प्रदर्शनी काशी के टाउन हाल में की गई जिसका उद्घाटन गाँधी जी ने किया। गाँधी जी ने कहा था ''खादी के द्वारा देश की संगठन शक्ति बढ़ेगी और संगठन का काम पूरा होगा।''

सम्भवतः चरखा संघ संसार में अपने ढंग का प्रथम न्यासधारिता के सिद्धान्त पर आधारित संगठन था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पाँचवें दशक में सम्पूर्ण देश में मिल के कपड़े की कमी थी। उस वक्त चरखा संघ के पास काफी तादाद में खादी पड़ी हुई थी, सदस्यों ने सोचा कि लाभ के साथ खादी बेचने का यह एक सुनहरा अवसर है। लेकिन गाँधी जी के निर्देश पर समूची खादी लागत कीमत पर बेची गयी और इस प्रकार संगठन में न्यासधारिता (Trusteeship) के सिद्धान्त का पालन किया गया। जमनालाल बजाज, शंकरलाल बैंकर, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, सरदार बल्लभभाई पटेल, पं0 जवाहर लाल नेहरू जैसे दिग्गजों की मदद से गाँधी जी ने वर्षों सफलतापूर्वक चरखा संघ का नेतृत्व मार्ग–दर्शन किया।

खादी राष्ट्रीय ध्वज पहले, वस्त्र बाद में

खादी ही एक मात्र ऐसा वस्त्र है, जिसका उपयोग भारत के राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण में किया जाता है। इसका उत्पादन चार स्तरों पर होता है–

1. धुनी हुई साफ रूई का हाथ से कता धागा तैयार करना।
2. हाथ कते धागे की हथकरघे पर बुनाई कर झण्डे का कपड़ा तैयार करना।
3. ऊपरी और निचले भाग को हरे एवं केसरिया रंग में रंगना व मध्य भाग को सफेद रंगना।
4. नीले रंग में स्क्रीन छपाई के द्वारा अशोक चक्र को मध्य में छापना।

इस समस्त प्रक्रिया में चक्र झण्डे के दोनों ओर दिखाई देगा एवं झण्डे के मध्य में रहेगा।

राष्ट्रीय ध्वज बनाने के लिए खादी, प्रमुख संस्थाओं जैसे क्षेत्रीय श्री गाँधी आश्रम, बाराबंकी, मराठवाड़ा खादी और ग्रामोद्योग समिति, नांदेड़ (महाराष्ट्र) क्षेत्रीय ग्रामोद्योग समिति, दौसा, गड़ग क्षेत्रीय सेवा समिति, धारवाड़, हेब्बली क्षेत्रीय सेवा संघ, धारवाड़ और कर्नाटक खादी और ग्रामोद्योग संयुक्त संघ, बेंगरी द्वारा तैयार की जाती है। बुनाई से आगे की प्रक्रिया खादी क्षेत्र से बाहर कराई जाती है। अब नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज उपयुक्त स्थानों में फहराने की स्वतन्त्रता दिये जाने के पश्चात् यह आवश्यक हो गया है कि उसे मूल्य की दृष्टि से नागरिकों के लिए सुलभ बनाया जाय।

खादी अभियान एवं चरखा संघ का पुनरावलोकन

दिसम्बर, 1924 में गाँधी जी ने कांग्रेस के बेलगाँव अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। यहीं से उन्होंने खादी अभियान का श्री गणेश किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने दो बातें कहीं–

1. कांग्रेस में एकता बनाए रखी जाए और सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित कर दिया जाए।
2. खद्दर का प्रचार अभियान छेड़ा जाए।

कांग्रेसजनों को खद्दर का सिद्धांत मनवाने के लिए उन्होंने कांग्रेस को इस बात के लिए राजी कर लिया कि चार आने का शुल्क देकर सदस्यता प्राप्त करने के बजाय वही कांग्रेसजन मताधिकार प्रयोग का अधिकारी माना जाए जो 2,000 गज सूत प्रति मास काते।

अधिवेशन के समापन भाषण में गाँधी जी ने खादी अभियान के संबंध में सदस्यों से अपील करते हुए कहा–

''आप लोग अपने जिले के हर भाग में जाए और खद्दर, हिन्दू–मुस्लिम एकता तथा अस्पृश्यता उन्मूलन का संदेश घर–2 पहुँचाए। देश के नवयुवकों को अपना अनुयायी बनाए और उन्हें स्वराज के असली सैनिक के रूप में ढालें।''

गाँधी जी ने गाँव–गाँव में चलने वाले उद्योगों को नये एवं क्रान्तिकारी परिप्रेक्ष्य में देखा। उन्होंने कहा कि देश के आर्थिक पतन का मुख्य कारण घर में चलने वाले उद्योगों का ह्रास होना है। उन्होंने इन उद्योगों को पुनः स्थापित करने का कार्य किया। यह कार्य उन्होंने इस सदी के तीसरे दशक में प्रारम्भ किया। देश के विभिन्न भागों में विविध प्रकार के बुनाई के करघों का प्रचलन था। इसी प्रकार गाँवों में कहीं–कहीं कताई के साधन भी थे, लेकिन उनका उपयोग बहुत कम होता था। करघों पर आमतौर पर मिल के सूत की बुनाई होती थी। वर्ष 1925 में गाँधी जी ने 'अखिल भारतीय चरखा संघ' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हाथ कते बुने खादी वस्त्र का उत्पादन, बिक्री एवं प्रचार–प्रसार करना था। खादी को उन्होंने 'स्वतंत्रता का प्रतीक' कहा।खादी कार्यक्रम पूर्ण उमंग के साथ आगे बढ़ा। ''हिन्दी नवजीवन'' में 15 अगस्त, 1929 के अंक में प्रकाशित एक प्रश्न के उत्तर में बापू ने कहा¯ ''भले ही खादी जहर–सी कड़वी हो, मेरे पास उसे छोड़ दूसरा कोई इलाज नहीं है। मैं खादी छोड़कर 'स्वराज' की कल्पना नहीं कर सकता। यह कहना कि जन साधारण को खादी कड़वी लगती है, मिथ्या है। हाँ, यह सच है कि अनेक नगरवासियों को यह कड़वी लगती है। मगर शहरों में सारे भारत का समावेश तो नहीं होता। भारत के मुट्ठी–भर शहर समुद्र में बूंद जैसे हैं। भारत का आधार उसके देहात हैं।''चरखा संघ के इतिहास में तीन विशिष्ट सोपान है। वर्ष 1925 से 1933 तक इसने वास्तव में योग्य वृद्ध लोगों और विधवाओं के जीवन में आयी निराशा कम करने तथा बीमारियों, बाढ़, तूफान आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं की चपेट में आये

लोगों को खादी कार्य के माध्यम से जीवनदायी सहारा देने यानि राहत पहुँचाने का काम किया। इसलिए प्रथम सोपान को 'राहत कार्य खादी' की संज्ञा दी जा सकती है। वर्ष 1933 में गाँधी जी यों ही पास में महाराष्ट्र के एक गाँव में गये और वहाँ उसकी एक वृद्धा से भेंट हुई। उससे उन्हें पता लगा कि दिनभर कताई काम करने पर उसे मजदूरी में एक आना (अब के छः पैसे) प्रतिदिन मिलता है उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने हरिजन में बड़ा जोरदार तर्क देते हुए लिखा कि, सूतकारों को प्रति घंटे एक आने की दर से तो पारिश्रमिक मिलना ही चाहिए। खादी वालों में अन्दर ही अन्दर फुस–फुसाहट शुरू हो गयी, क्योंकि खादी पहले ही महँगी थी और पारिश्रमिक बढ़ाने से उसके और भी अधिक महँगी हो जाने का डर था। तथापि, गाँधी जी की इच्छा का आदर करते हुए कुछ राज्योमें पारिश्रमिक बढ़ाकर चार आने (पच्चीस पैसे) प्रतिदिन कर दिया गया। इस प्रकार चरखा संघ के इस सोपान को 'जीवन वेतन खादी' सोपान कहा जा सकता है।भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल जाने के उपरान्त वर्ष 1945 में गाँधी जी की रिहाई हुयी। उन्होंने देखा कि हर जगह श्मशान जैसी शांति छायी हुई है। खादी कार्य शायद ही कहीं देखने को मिलता था। पूछ–ताछ करने पर पता लगा कि 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान सबसे ज्यादा मार खादी कार्यकर्ताओं पर ही पड़ी, सबसे ज्यादा बुरा हाल उन्हीं का किया गया। उत्तर में अधिकांश भण्डार या तो लूट लिये गये या उन पर ताला लगा दिया गया, कार्यकर्ताओं को जनता में जागृति पैदा करने के 'जुर्म' में जेल में डाल दिया गया। गाँधी जी बड़े उदास हुए और वर्ष 1945 में सेवाग्राम में उन्होंने खादी कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाया। सम्मेलन तीन दिन चला। उन्होंने पूरे भारत की स्थिति का लेखा–जोखा लिया और बताया कि उन्होंने क्यों कर समूचे देश में खादी कार्यक्रम चलाया है।उन्होंने बताया कि खादी सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, आम लोगों के साथ धुल–मिल जाने, वर्तमान निष्क्रिय समाज में प्राण फूँकने, आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन, आम आदमी के लिए वास्तविक स्वराज का प्रतीक है। बड़े संतप्त स्वर में उन्होंने कहा कि, अगर वे इन सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करते तो भारत के कोने–कोने से चरखे लाकर एकत्रित कर लें और फिर उन्हें उनके शरीर पर रखकर 'समारोहपूर्वक' जला डाले। श्रोता तुरन्त ही उनकी स्पष्टवादिता के पीछे छिपे सत्य को समझ गये और उन्होंने जो कुछ कहा उसके मुताबिक काम करने को वचनबद्ध हुए। अपने–अपने क्षेत्रों में जाकर कार्यकर्ताओं ने वस्त्र के मामले में स्वावलंबी बनने की दृष्टि से कपास तुड़ाई से लेकर सूत कताई या बुनाई तक के सभी काम करने शुरू कर दिये। खादी की विभिन्न प्रक्रियाओं में कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण देने की दृष्टि से खादी विद्यालय खोले गये। गाँवों और शहरों–कस्बों में फिर एक बार देशभक्ति के कार्यक्रम चलने लगे। खादी के इस तीसरे चरण को 'खादी दर्शन सोपान' की संज्ञा दी गयी।भारत में खादी, गाँधी जी एवं उनके वर्ष 1930 के खादी अभियान से जुड़ी है, जिसमें उत्पादन का विकेन्द्रीकरण गाँवों को आत्मनिर्भरता बना एवं हस्त निर्मित वस्तुओं का निर्माण करना, उद्देश्य था।

वर्ष 1945 में चरखा संघ में नव–संस्करण का प्रस्ताव पारित किया गया। आचार्य विनोबा भावे ने उसका स्वागत करते हुये कहा था, चरखा संघ का यह प्रस्ताव उसके इतिहास में एक विशेष प्रस्ताव गिना जायेगा, क्योंकि उससे वह उत्पत्ति–बिक्री के काम से मुक्त होकर अपना सारा ध्यान स्वावलंबी खादी के प्रचार में लगाना चाहता है। वही उसका मूल उद्देश्य था, लेकिन परिस्थितिवश उसे उत्पत्ति, बिक्री के काम में फँस जाना पड़ा। इससे खादी की कुछ भावना पैदा हुई, लेकिन उतने से अहिंसक समाज की स्थापना नहीं हो सकती थी। उसके लिये प्रचलित प्रवाह के सामने खड़े होकर 'जो काते वो पहने, पहने वो काते' वाले मंत्र की जरूरत थी।

खादी कथा : एक दृष्टि में

1. 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रीका से लौटने के पश्चात् गाँधी जी ने अहमदाबाद के निकट कोचर में एक आश्रम की स्थापना की और वहाँ करघा लगाया। गायकवाड़ राज्य के बीजापुर गाँव की एक कत्तिन गंगा आश्रम से आयी उसी दिन से कताई चक्र चरखे ने घूमना आरम्भ किया।
2. 2 अप्रैल, 1920 को कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने भारतीय ध्वज में खादी के प्रयोग का निर्णय लिया और खादी असहयोग आन्दोलन का पूर्ण हिस्सा बन गई।
3. दिसम्बर, 1923 में खादी कांग्रेस में जमुनालाल बजाज की अध्यक्षता में "अखिल भारतीय खद्दर बोर्ड" की स्थापना हुई।
4. दिसम्बर, 1924 में बेलग्राम कांग्रेस ने खादी का काम सुचारू ढंग से चलाने के लिए अलग संस्था की स्थापना की।
5. 23 दिसम्बर, 1925 को गाँधी जी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना की गई। पं0 जवाहर लाल नेहरू एवं श्री शंकरलाल बैंकर इसके सचिव थे। गाँधी जी इसके आजीवन अध्यक्ष रहे।
6. आचार्य जे0वी0 कृपलानी ने 27 नवम्बर, 1920 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में गाँधी जी के भाषण से प्रेरित होकर 29 नवम्बर, 1920 को वाराणसी में श्री गाँधी आश्रम की स्थापना की और 280 की मामूली रकम से उत्पादन तथा बिक्री गतिविधियाँ शुरू की। खादी गतिविधि आयोजित करने वाली यह पहली संस्था बनी और उसने वर्ष 1927 में प्रथम खादी प्रदर्शनी का आयोजन किया।
7. वर्ष 1930 में अखिल भारतीय कत्तिन संघ एवं श्री गाँधी आश्रम के मध्य समझौते हो जाने के कारण श्री गाँधी आश्रम ने खादी गतिविधि का प्रबन्ध अभिकर्ता बनकर काम करना शुरू किया। बाद में श्री गाँधी आश्रम का मुख्यालय मेरठ हो गया।
8. गाँधी जी सभी संस्थाओं का विलय कर विभिन्न निर्माणोन्मुखी कार्य सम्भालनें के लिए एक संस्था स्थापित करना चाहते थे और इसके लिए दिनांक 3 व 4 फरवरी, 1948 को वर्धा में एक बैठक निश्चित की गई, जो कि दिनांक 30 जनवरी, 1848 को गाँधी जी की हत्या के कारण आयोजित न हो सकी।

9. दिनांक 13 व 14 मार्च, 1948 को सम्पन्न बैठक में सर्वोदय समाज के निर्माण के लिए संकल्प लिया गया और इस संकल्प के परिप्रेक्ष्य में वर्ष 1949 में ''सर्वोदय सेवा संघ'' की स्थापना की गई। बाद में खादी गतिविधियों की देख–रेख के लिए इसके ऊपर "खादी समिति" की स्थापना की गई।
10. सर्वोदय संघ के अनुरोध पर भारत सरकार द्वारा वर्ष 1953 में अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना की गई।
11. वर्ष 1956 में संसद का एक अधिनियम पारित कर 1 अप्रैल, 1957 को खादी और ग्रामोद्योग आयोग की स्थापना की गई।

आचार्य विनोबा भावे ने 9 नवम्बर, 1981 को खादी मिशन की स्थापना की, जो खादी संस्थाओं के महासंघ के रूप में कार्य कर रहा है।

कबीर ने अपने प्रसिद्ध दोहे के जरिए खादी के विषय में कहा है–

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी।
नौ–दस मास बनन को लागे, मूरख मैली कीनी।।

अर्थात् शरीर रूपी वस्त्र बुनने में पाँच तत्वों का प्रयोग किया गया और नौ–दस मास में यह तैयार हुआ। इस प्रकार बनी शरीर रूप चादर मूर्खों ने गंदी कर दी।

चरखा कथा : एक दृष्टि में

गाँधी जी चरखा के तकनीकी उन्नयन के पक्षधर थे, उन्होंने इसके लिए 1 लाख का नकद पुरस्कार भी घोषित किया था।

1. वर्ष 1961 में तमिलनाडु (कोयम्बटूर) स्थित एकम्बरनाथ कपड़ा मिल के एक मजदूर ने रिंग कताई तकनीकी पर आधारित 4 तकुआ चरखा, ऊनी चरखा विकसित किया।
2. वर्ष 1968 खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (के.वी.आई.सी) ने बी.आई.एस. (तत्कालीन आई.एस.आई.) के सहयोग से भारतीय राष्ट्रीय ध्वज हेतु मानक विकसित किए।
3. वर्ष 1971 के.वी.आई.सी. ने योजना आयोग भारत सरकार के अनुमोदन से खादी में नया मॉडल चरखा (एन.एम.सी.) शुरू किया व ढ़ाका मलमल के उद्धार के लिए कदम उठाया।
4. वर्ष 1977 के.वी.आई.सी. ने खादी उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प देने हेतु पॉलि वस्त्र, पॉलिस्टर सूती मिश्रित हाथ से बुने कपड़े की शुरूआत की।
5. वर्ष 1987 के.वी.आई.सी. ने अपने एन.एम.सी. कार्यक्रम को पुष्टि करने हेतु केन्द्रीय पूनी/रोविंग निर्माण सुविधा की स्थापना की।
6. वर्ष 1989 खादी के डिजाईन विकास हेतु निफ्ट, अहमदाबाद के साथ गठजोड़ किया।
7. शुरूआती वर्ष 1990 में व्यवसायिक डिजाईनरों की मदद से के.वी.आई.सी. की खूबसूरत खादी के प्रयोग वर्ष 1988, खादी डेनिम का उत्पादन।
8. वर्ष 1999 के.वी.आई.सी. ने बी.आई.एस. के सहयोग से चरखे के मानक विकसित किए।
9. वर्ष 2001 पूर्णतः सुसज्जित डिजाईन प्रकोष्ठ की एन. आई.डी., अहमदाबाद में स्थापना हुई।
10. वर्ष 2002 खादी के गुणवत्ता समाश्वासन हेतु कपड़ा समिति के साथ गठजोड़।
11. वर्ष 2003 खादी नमी प्रसंस्करण हेतु गुणवत्ता मानकों के निर्माण के लिए आई.आई.टी. दिल्ली से गठजोड़।
12. वर्ष 2005–06 केन्द्रीय पूनी संयंत्र, कुत्तूर तथा चित्रदुर्ग को गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के लिए आई0एस0ओ0 9001–2001 प्रमाण–पत्र मिला।
13. वर्ष 2007, के0वी0आई0सी0 ने ई–चरखा, 2 तकुआ एन0एम0सी0 चरखा जिसे चलाते समय आर्मेचर/डायनमो घूमता है जिससे कत्तिन को अपने निवास को प्रकाशित करने, ट्रांजिस्टर सुनने और मोबाइल चार्ज करने के लिए बिजली मिलती है।

भारत में खादी और ग्रामोद्योग की स्थिति :

ग्रामोद्योगों का चलन भारतीय इतिहास के लिए कोई नयी बात नहीं है, बल्कि हजारों वर्ष से चली आ रही ग्रामोधारित भारतीय संस्कृति और परम्परा की आर्थिक रीढ़ ग्रामोद्योग ही रहे हैं। आजादी से पहले चूँकि अंग्रेजों की दृष्टि भारतीय समाज को उसकी अपनी जड़ों से निरन्तर काटने की रही, इसलिए ग्रामोद्योग के विकास पर उतना जोर नहीं दिया जाता रहा। आजादी के बाद विकास का चक्र जब चला तो उसके साथ ही ग्रामोद्योगों में फिर से प्राण फूँकने की कोशिशे भी आरम्भ की गयीं। वर्ष 1953 में ''अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग मण्डल'' की स्थापना के साथ इन प्रयासों में तेजी आयी। संसद में पारित एक अधिनियम के प्रभाव स्वरूप 1 अप्रैल, 1957 में एक स्वायत्तशासी संगठन के तौर पर ''खादी और ग्रामोद्योग आयोग'' की स्थापना हुई, जिसने मण्डल से कार्यभार ग्रहण किया। इसके साथ ही ग्रामोद्योग को नवजीवन देने के प्रयासों में अभियानकारी तेजी आई। ग्रामोद्योग आयोग के प्रयासों के अलावा हथकरघा बोर्ड, दस्तकारी बोर्ड आदि के कामकाज से भी ग्रामोद्योग के भारतीय खादी और ग्रामोद्योग परिदृश्य को सँवारा गया। इसी क्रम में यह उल्लेख भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि ''ग्रामोद्योग'' को जिस अर्थ में ग्रहीत किया गया है, उस अर्थ में वह ठेठ भारतीय गाँवों की माटी से जा जुड़ता है। ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योग में खासा अन्तर किया गया है। दियासलाई, पटाखों, अगरबत्तियों के निर्माण से सम्बन्धित उद्यमों को ग्रामोद्योग (दस्तकारी) माना गया है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग अधिनियम में दी गई परिभाषा के अनुसार– ''ग्रामोद्योग का अभिप्राय है ऐसा कोई भी उद्योग, जो ग्रामीण क्षेत्र ;जिसकी आबादी बीस हजार या ऐसा ही किसी अन्य संख्या से अधिक न होद्ध में स्थित हो जो विद्युत के उपयोग के साथ या उसके बिना उपयोग के कोई वस्तुओं का उत्पादन करता है या कोई सेवा प्रदान करता है तथा जिसमें प्रति करीगर या कामगार निवेशित स्थायी पूँजी ;संयंत्र तथा मशीनरी एवं भूमि–भवन मेंद्ध मैदानी क्षेत्रों में 1 लाख और पहाड़ी क्षेत्रों में 1.50 लाख या ऐसी किसी अन्य राशि से अधिक न हो जो केन्द्र सरकार द्वारा समय–समय पर सरकारी राजपत्र (गजट) में अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए।

ग्रामोद्योगों का वर्गीकरण

ग्रामोद्योग को नये सिरे से प्राणित और सुचारू रूप में संचालन करने के लिए 'ग्रामोद्योग आयोग' की

उच्च अधिकार प्राप्त समिति ने ग्रामोद्योग के भारतीय परिदृश्य को कुल आठ श्रेणियों में वर्गीकृत किया है, जो निम्नलिखित है–

1. खनिज आधारित उद्योग
2. वनाधारित उद्योग
3. कृषि आधारित और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
4. बहुलक और रसायन आधारित उद्योग
5. ग्रामीण अभियांत्रिकी और गैर–परम्परागत ऊर्जा या जैव प्रौद्योगिक आधारित ग्रामोद्योग
6. पॉलि वस्त्र/वस्त्रोद्योग एवं सेवा; खादी के अतिरिक्त ग्रामोद्योग
7. खादी वस्त्र उद्योग
8. हाथ कागज एवं रेशा उद्योग

चरखा, खादी एवं ग्रामोद्योग की पुर्नस्थापना

वर्ष 1880 से हमारे वस्त्र उद्योग में मशीनों का प्रवेश हुआ; हमारे देहाती घरों में खादी का विध्वंस होना शुरू हो गया। वर्ष 1915 से गाँधी जी की चेतावनी के बावजूद भी मशीनें धड़ा–धड़ आती चली गई और औद्योगीकरण तीव्र गति से बढ़ चला। परिणाम यह हुआ कि उसने भारतीय समाज की संस्कृति की जड़ें हिला दी। मजदूरी और श्रम को घंटों और मशीन के प्रति मिनट के चक्कर के हिसाब से आँकते है। परिणाम यह हुआ कि खादी कला का महत्व नष्ट हो गया। गाँव की जिन्दगी एकदम अव्यवस्थित हो उठी। बड़ी संख्या में लोग शहरों की तरफ भाग चले जिससे हमारे देहाती घरों की प्रतिष्ठा नष्ट हो गयी।अंग्रेजों ने धीरे–धीरे हमारे वस्त्रोद्योग तथा अन्य ग्रामोद्योगों को लगभग नष्ट कर दिया था। ग्रामीण रोजगार की तलाश में नगरों को पलायन करने लगे थे। फलस्वरूप ग्रामीण भारत का सामाजिक–आर्थिक ढाँचा छिन्न–भिन्न होने लगा। अंग्रेजों ने राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने के साथ ही आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों में भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। इंग्लैण्ड से दक्षिण अफ्रीका जाते समय वर्ष 1909 में जहाज से लिखे पत्र में, जो हिन्द स्वराज में प्रकाशित हुआ था, गाँधी जी ने कहा कि, ''भारत का भाग्य करघे पर निर्भर है।'' वस्तुतः उनका मतलब चरखे से था। गोपाल कृष्ण गोखले का सुझाव मानकर 1915 ई0 में भारत आने पर उन्होंने अध्ययन की दृष्टि से भारत भ्रमण किया। उन्होंने देखा कि भारतीय प्रायः हर चीज से डरते हैं और ग्रामीण युवक साल में छः महीने काम के अभाव में अपना समय चौपालों में बैठकर बर्बाद करते हैं। उनकी निष्क्रियता समाप्त करने और विदेशी शासन से अपनी रक्षा करने का साहस जुटाने में उन्हें समर्थ बनाने के लिए उन्होंने जनता के सम्मुख अपना रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पूर्ण स्वराज्य कार्यक्रम में गाँधीजी ने राजनैतिक स्वराज्य के साथ–साथ आर्थिक स्वराज्य पर भी बल दिया, उनके आर्थिक स्वराज्य कार्यक्रम में चरखा केन्द्रीय भूमिका में था। वे स्वयं भी चरखा देखना और चलाना चाहते थे। वर्ष 1915 से 1917 तक जो भी कोई बड़ा आदमी उनके साबरमती आश्रम में आता था। उससे वे कहते थे कि, मैं चरखा देखना चाहता हूँ। अंततोगत्वा एक सम्पन्न विधवा गुजराती वीरांगना, गंगा बहन मजूमदार ने सूरत जिले के अनेक भागों का दौरा किया और उसने बीजापुर गाँव के एक मुसलमान के घर में कहीं एक कोने पर पड़ा धनताड़िया चरखा देखा। गाँधी जी के निर्देशानुसार वे बीजापुर में मुसलमान महिलाओं को कताई करने के लिये इस शर्त पर तैयार कर सकी कि अगर उन्हें तैयार पूनियों की पूर्ति की जाये तो वे कातेंगी। वे इस दुविधा में थे कि पूनियाँ कहाँ से प्राप्त की जायें। तथापि, गाँधी जी के कुछ मिल मालिक मित्रों ने यह दुविधा दूर की। उन्होंने कताई के लिए मिल से बनी पूनियाँ भेजी। इस प्रकार बीजापुर में भुला दिये गये और बेकार पड़े चरखे फिर से चलने लगे तथा समूचा गाँव कताई के धुन में मस्त हो गया। सूत की गुंडियां साबरमती आश्रम भेजी जाती। वहाँ उनकी बुनाई होती थी, लेकिन पूनियों के लिए मिलों पर निर्भरता गांधी जी के मन–मस्तिष्क को उद्धेलित करती रही। एक बार वे मुम्बई गये थे तो मणि भवन के पास संयोगवश उन्हें एक धुनाई करने वाला आदमी मिल गया। उस आदमी के स्वीकार करने पर उसे आश्रम लाया गया, जहाँ वह लिनन की पट्टी (फाहा) से पूनियाँ बनाने में जुट गया। गाँधी जी के भतीजे मगनलाल आश्रम में ही रहते थे और अभियांत्रिकी जानते थे। वे शीघ्र ही धुनाई और पूनी बनाना सीख गये। उक्त धुनाई करने वाला व्यक्ति आश्रम के लिए काफी महँगा पड़ रहा था। शीघ्र ही आश्रमवासी भी उक्त कला सीख गये और फिर उक्त धुनाई करने वाले को सेवा मुक्त कर दिया गया। तत्पश्चात् मिल मालिक पूनियों के स्थान पर रूई की ही पूर्ति करने लगे। इस हाथ कते सूत से बने कपड़े को 'खादी' की संज्ञा दी गयी। 'खादी' पारसी का एक शब्द है, जिसका अर्थ होता है– 'सौभाग्यम्'। इसके बाद गाँधी जी ने आश्रमवासियों के लिये यह अनिवार्य कर दिया कि, वे खादी का ही अपनी पोशाक के लिये उपयोग करेंगे। इस प्रकार कठिनाईयों का सामना करते हुए और गांधी जी के व्यक्तिगत प्रयास के फलस्वरूप तथा अंग्रेजी राज को समाप्त करने के इरादे से वर्ष 1918 के आस–पास साबरमती आश्रम में खादी का पुर्नजन्म हुआ। वर्ष 1923 की बात है। झंडा सत्याग्रह का जमाना था। बापू जेल में बंद थे। उनका जन्मदिन आ रहा था। उनको मनाने का विचार चल रहा था कि, इतने में बापू का आदेश मिला ''मेरा नहीं चरखे का जन्मदिन मनाओं।'' तब से गाँधी जयंती ''चरखा जयंती'' के रूप में मनाई जाने लगी। देश भर की राष्ट्रीय संस्थाओं में कताई की स्पर्धाएँ होने लगी, खादी बिक्री की छूट दी जाने लगी और गाँधी जयंती के समय खादी की खूब बिक्री होने लगी।

भारतीय खादी और ग्रामोद्योग की प्रोत्साहन संबंधी प्रमुख योजनाओं का मूल्यांकन

खादी और ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने हेतु अनेक प्रकार के ग्रामीण उद्योगों को प्रात्साहित कर गाँवों में फैली बेरोजगारी को स्वरोजगार में बदलने के लिए नयी योजनाओं को प्रारम्भ करने का प्रयास किया गया। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु केन्द्र सरकार के दिशा– निर्देश में वर्ष 1994 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी0वी0नरसिंह राव की अध्यक्षता वाली उच्चाधिकार प्राप्त समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर 1 अप्रैल, 1995 को 'ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम* (Rural Employment Generation Programme—REGP) की शुरूआत की गई जो कि

"खादी और ग्रामोद्योग आयोग" द्वारा क्रियान्वित केन्द्र प्रायोजित योजना है इस कार्यक्रम को "मार्जिन मनी योजना'' के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान में यह योजना वर्ष 2008 से कुछ संशोघनों के साथ नये नाम "प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम" (पी0एम.ई0जी0पी0) के नाम से प्रारम्भ की गई। जिसे प्रधानमंत्री रोजगार योजना और ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम को विलय कर तैयार किया गया है। भारत सरकार एवं खादी और ग्रामोद्योग आयोग का मूल उद्देश्य सम्पूर्ण देश में ग्रामीण बेरोजगारों हेतु रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराना है।

ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (आर0ई0जी0पी0)

ग्रामीण उद्योगों के विकास के इतिहास में खादी और ग्रामोद्योग क्षेत्र के अन्तर्गत शुरू किये गये ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (आर0ई0जी0पी0) ने उदारीकरण के लिए एक नये अध्याय का निर्माण किया है इसीलिए इसे खादी और ग्रामोद्योग आयोग के प्रमुख कार्यक्रम का दर्जा दिया गया। खादी और ग्रामोद्योग आयोग वर्ष 1995–96 से ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (REGP) का क्रियान्वयन कर रहा है। ग्रामीण उद्योगों और ग्रामीण क्षेत्र के अवसर में विस्तार से इस योजना ने उद्यमिता का कौशल रखने वाले युवकों में उत्साह पैदाकर चतुर्दिश ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी जड़े मजबूत की है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य रोजगार के अवसर प्रदान कर ग्रामीण लोगों को आर्थिक स्थिति में सुधार लाना और साथ ही आय–अर्जन की गतिविधियों का संवर्धन कर उन्हें वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना है। आरईजीपी योजना खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा दी जाने वाली मार्जिन राशि अनुदान सहायता से जुड़ी एक ऋण सम्बन्धी योजना है। युवाओं में जागरूकता पैदा करने से मदद के उद्देश्यों से आर.ई.जी.पी. के ग्रामीण क्लबों के जरिए जागरूकता शिविर चलाने के लिए खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने नेहरू युवा संगठन के एक साथ भी समझौता किया है। आर.ई.जी.पी. के संवर्धन के लिए महिला एवं बाल विकास, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, अनुसूचित जाति/जनजाति/अल्पसंख्यक, वित्त एवं विकास आयोग, लघु उद्योग के लिए ऋण गारंटी निधि ट्रस्ट आर्मी वाइफ वेलफेयर एसोसिएशन जैसे– दूसरे संगठनों की वित्तीय संगठनिक क्षमताओं को एकीकृत करने की कोशिश जारी रही।आर.ई.जी.पी. के उद्देश्य के अन्तर्गत सामाजिक क्षेत्र के सभी वर्गों को इसमें शामिल करना है। योजना में निहित प्रत्यक्ष प्रोत्साहन की व्यवस्था के अन्तर्गत अ0जाति/जनजाति/अन्य पिछड़े/शारीरिक विकलांग/पूर्व सैनिक/महिला/उत्तर पूर्वी क्षेत्र, जिसमें सिक्किम/सीमावर्ती क्षेत्र शामिल है जनजाति जिसमें अंडमान निकोबार एवं लक्षद्वीप शामिल के उद्यमियों से 10 लाख तक की परियोजना लागत पर तीस प्रतिशत मार्जिन राशि अनुदान सहायता प्रदान की जाती है और 5 प्रतिशत राशि उसके खुद के योगदान के लिए रखी गई है, जबकि श्रेणी के उद्यमियों के लिए यह क्रमशः 25 प्रतिशत और 10 प्रतिशत है। इस बात को सुनिश्चित करने में पूरा ध्यान रख गया है कि गैर–लाभान्वित सामाजिक समूह को बराबरी का प्रोत्साहन और वित्तीय सहायता मिले। इनके अलावा 10 से 25 लाख रुपये की परियोजना पर सभी वर्गो के लाभार्थियों को परियोजना लागत की 10 प्रतिशत मार्जिन राशि सहायता के रूप में दी गयी।

निष्कर्ष

संक्षेप में खादी और ग्रामोद्योगी संस्थाओं के कार्यों एवं क्रिया–कलापों के व्यवस्थापन हेतु निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है–

1. कारीगरों के हितों की सुरक्षा एवं उनके लिए सामाजिक सुरक्षा उपायों का प्रावधान।
2. कर्तव्य एवं दृष्टिकोण का एक–दूसरे से बराबर मेल होना चाहिए।
3. व्यक्तियों, धन, मशीनरी, माल इत्यादि स्रोतों का अधिकतम उपभोग।
4. व्यक्तियों को नये विचारों एवं नयी चुनौतियों के लिए प्रेरित करें।
5. प्रयोग की उत्सुकता एवं नयी तकनीकी को ग्रहण करना।
6. रिकार्डों का उचित एवं नियमित रख–रखाव।
7. वित्तीय अनुशासन एवं खर्चे पर नियंत्रण।
8. बाजार के रूझान को ध्यान में रखते हुए उचित उत्पादन योजना।
9. ग्राहकों को सेवा देने के लिए कर्मचारियों को व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित होना।
10. ग्राहक सन्तुष्टि अन्तिम उद्देश्य होना चाहिए।
11. दर्शन के साथ–साथ खादी और ग्रामोद्योगी उत्पादों की विशिष्टता के बारे में उचित प्रचार एवं उन्नयन ।
12. खादी के साथ अन्य ग्रामोद्योगी वस्तुओं का विक्रय किया जाना।
13. उत्पादकता के उच्च स्तर को बनाये रखना तथा उत्पादों की लागत को बाजार के साथ प्रतिस्पर्धात्मक स्वरूप में प्रस्तुतीकरण।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भावे, विनोबा, सर्वोदय विचार और स्वराज्य शास्त्र*
2. *धर्माधिकारी, दादा, सर्वोदय दर्शन, सर्व सेवा संघ*
3. *गाँधीजी, पंचायत राज*
4. *गाँधी, मोहनदास करमचन्द्र, गाँधी शिक्षा (तीसरा भाग), सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, ग्यारहवाँ संस्करण, 1967*
5. *खेर, व्ही0पी0, आर्थिक और औद्योगिक जीवन, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 1961*
6. *बी0एल0 यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी लि0 नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1981.*
7. *गाँधी, मोहनदास करमचन्द्र, ठड्ढा, सिद्धराम (सम्पादक), मेरे सपनों का भारत, सर्वसेवा संघ वाराणसी, द्वितीय संस्करण*
8. *गाँधी, मोहनदास करमचन्द्र, कुमारप्पा भरतम् (सम्पादक), खादी क्यों और कैसे, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद, 1989.*

9. *बांधी, कृष्णदास, घरेलू कताई की आम गिनतियाँ, अखिल भारतीय सर्व–सेवा संघ, वर्धा मुम्बई, अक्टूबर, 1957.*
10. *गाँधी जी ने कहा था–, अगर मैं डिक्टेटर होता, सस्ता साहित्य मण्डल, 1961*
11. *चौहान, शिवध्यान सिंह, भारतीय व्यापार, साहित्य भवन, आगरा, दसवाँ संस्करण, 1989.*
12. *चक्रवर्ती, डॉ0 डी0एन0, तीसरी दुनिया का तीसरा रास्ता, अखण्ड प्रकाशन प्रतिष्ठान, वाराणसी.*
13. *चरित्र, रामप्रवेश, विचित्र भाई (विचित्र भाई अमृत महोत्सव समिति) गाँधी भवन, लखनऊ.*
14. *जैन, डॉ0 एस0सी0, विपणन प्रबन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, नवाँ संस्करण.*
15. *जोशी, पुष्पा, गाँधी आन वूमेन, सेन्टर फार वूमेन डेवलपमेण्ट एण्ड स्टडीज, नई दिल्ली एण्ड नैना जीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1988.*
16. *जैन, प्रो0 पी0के0, भारत की आर्थिक संरचना, विशाल प्रकाशन मन्दिर मेरठ, तृतीय संस्करण, 1999.*
17. *जैन, आनन्द प्रकाश, चरघा और खादी सर्वोदय प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली.*
18. *झिंगन, एम0एल0, विकास का अर्थव्यवस्था एवं आयोजन कोणार्क प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1998 द्वादश संस्करण 1995.*
19. *तिवारी, आर0एन0, एग्रीकल्चर डेवलपमेण्ट एण्ड पॉपुलेशन ग्रोथ सुल्तान चन्द्र एण्ड सन्स, दिल्ली*
20. *तिवारी, विजय कुमार, भारत का जनसंख्या भूगोल भाग–2, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई, 1997.*
21. *पाटनी आर0एल0, कृषि अर्थशास्त्र, संजीव प्रकाशन, मेरठ, अष्टम् संस्करण.*